अपनी पहचान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अपनी पहचान करना बहुत कठिन है। अपनी पहचान को आत्म निरीक्षण करना भी कहते हैं। हम इन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह ज्ञान बाह्य जगत का होता है। हम अपने को जानने का प्रयास नहीं करते। आजकल गुगल के माध्यम से विश्व के विषय में छोटी से लेकर बड़ी तक की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। भौतिक जगत् से सम्बन्धित सभी विषय गुगल पर मौजूद हैं। एक छोटा सा बालक भी गुगल के माध्यम से दुनिया को जान लेता है। यह संसार का बाह्य ज्ञान है। बाहर के विषयों को हम सदैव जानने का प्रयास करते हैं किन्तु अन्दर जिसके द्वारा यह सम्पूर्ण ज्ञान होता है उसे हम कभी जानने का प्रयास ही नहीं करते।

यदि चलने वाले व्यक्ति को रास्ते का ज्ञान हो जाये तो वह अपनी मंजिल तक पहुंच जाता है। यदि रास्ते का ज्ञान नहीं है तो वह इस संसार में भटकता हुआ कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। इस संसार में रियल तत्व आत्मा है। अन्य सभी वस्तुएं रिलेटिव है। किसी सुन्दर रमणी को देखकर मनुष्य उसमें आसक्त हो जाता है। यदि वह सम्यक् दृष्टि रखें और उसे हाड़–मांस का पुतला समझे तो उसकी दृष्टि बदल जायेगी। दृष्टि बदलने से दशा बदल जाती है। आसक्ति के कारण हम एक–दूसरे से बंधे हुए हैं। आसक्ति ही बंधन का कारण है। शरीर में विराजमान आत्मा मूल तत्व है। जिसकी दृष्टि में आत्म तत्त्व विराजमान रहता है वह सबको जान जाता है। चौरासी लाख जीव योनियों में विराजमान आत्मा एक ही है। आत्मा में कोई भेद नहीं है। भेद कर्म सापेक्ष है।

आत्मा सनातन सत्य है। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कहाँ जाउंगा? इन प्रश्नों के उत्तर के लिए आत्मचिन्तन करना पड़ता है। इन प्रश्नों का समाधान बाह्य जगत में नहीं बल्कि आन्तरिक जगत में खोजना पड़ता है। मैं कौन हूँ? जब यह प्रश्न उपस्थित होता है तो आत्मा की सत्ता सामने आ जाती है। शरीर आत्मा नहीं है। शरीर जड़ पदार्थ है। मैं शब्द के द्वारा

जिसका बोध होता है वही आत्मा है। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। शरीर विनासशील है और आत्मा अविनाशी। शरीर को चलाने वाला आत्मा ही है।

यह जगत् दो तत्वों से मिलकर बना है– जड़तत्व और चेतनतत्व। जड़तत्व वह है, जिसमें पूरण और गलन की क्रिया होती है। दर्शन की भाषा में इसे पुद्गल या भौतिक तत्व कहते है। आत्मतत्व वह तत्व है जिसमें हलन–चलन कि क्रिया होती है। ये दोनों तत्व शाश्वत हैं। इनके गुण पृथक–पृथक हैं। दोनों को मिश्रण को संसार कहते हैं। शरीर भौतिक तत्वों से बना है। चेतनतत्व इसे संचालित करता है। यदि चेतनतत्व न रहे तो शरीर नष्ट हो जायेगा। आत्मा हर प्राणी में होती है। शरीर के नष्ट होने पर आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में अपने कर्म के अनुसार चली जाती है। जड़तत्व इस ब्रह्माण्ड में रहता है। जब तक कार्मण शरीर का आत्मा से संबंध रहता है, तब तक जीव को शरीर धारण करना पड़ता है। जब आत्मा कर्मों से मुक्त होती है तो वह मोक्ष को चली जाती है। संयोग, वियोग, सुख, दुःख चलता रहता है।

मैं कौन हूं? कहां से आया हूं? कहां जाऊंगा? इन तीनों प्रश्नों से आत्मसाक्षात्कार प्रारंभ होता है। मानव अपने आत्मा को जानने का कभी प्रयास ही नहीं करता। उसकी दृष्टि बहिर्मुखी होती है। सत्संग के प्रभाव से शास्त्रों के अध्ययन से और गुरुओं के सान्निध्य से जब मानव का विवेक जागृत होता है तो उसे आत्मतत्व जानने की प्रेरणा मिलती है। संसार का आनंद आत्मतत्व के आनंद का बिंदुमात्र है। आत्मतत्व का आनंद सिंधु के समान है और सांसारिक आनंद बिंदु के समान है। हम बिंदु के आनंद को ही सबकुछ मानकर बैठ जाते हैं। ऋषि, महर्षि, मुनि जो ब्रह्मलीन रहते हैं, वे संसार को मिथ्या समझते हैं। वेदान्त दर्शन में **ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या** का उद्घोष किया गया है। वेदान्त दर्शन के व्याख्याता श्रीमदाद्य भगवान् शंकराचार्य ने आत्मतत्व को सत्य माना और दृश्यमान संसार को मिथ्या। प्राय सभी दर्शनों में आत्मा और जगत् के ऊपर चिंतन हुआ है। कुछ दर्शन दोनों को सत्य मानते हैं, कुछ दर्शन केवल जगत् को ही सत्य मानते हैं और आत्मा की सत्ता में विश्वास नहीं करते। इस प्रकार भिन्न–भिन्न दर्शनों का भिन्न–भिन्न मत हैं।

आत्मसाक्षात्कार के द्वारा जीव मुक्त होता है। इस संसार में अनेक विद्यायें हैं। किन्तु आत्मविद्या सबसे बड़ी विद्या है। जिसको इस विद्या का ज्ञान हो जाता है, उसके लिए कुछ भी अज्ञात

नहीं रहता है। जिसने इस विद्या को जान लिया वह सबकुछ जान लेता है। इसलिए कहा गया है– **जे एगं जाणइ ते सव्वं जाणइ** अर्थात् जो एक को जान लेता है, वह सबको जान लेता है। आत्मा ही एक ऐसा तत्व है, जिसको जान लेने के बाद सबकुछ जान लिया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि आत्मतत्व को जाना कैसे जाये? आत्मतत्व के ज्ञान की अनेक विधियां बताई गयी है। राग–द्वेष रहित होकर आत्मतत्व की प्रेक्षा करने से आत्मतत्व का दर्शन होता है। आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन और अनंत सुख का स्रोत है। मानव भौतिक सुखों के प्रति आकृष्ट होकर जीवनभर उसी में लिप्त रहता है और इसी को बहुत बड़ा सुख मानता है। अंदर सुख भंडार इतना विशाल है कि उसका ज्ञान हो जाने पर उसका स्रोत निरंतर प्रवाहित होता रहता है।